

# जनजातियों पर वैश्वीकरण के प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन

नवीन कुमार<sup>1\*</sup>, डॉ. सन्तोष कुमार सिंह<sup>2</sup>

<sup>1</sup> असि० प्रोफेसर - समाजशास्त्र, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फतेहाबाद, सम्बद्ध - डॉ० भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Email: naveens7783@gmail.com

<sup>1</sup> शोध छात्र - समाजशास्त्र, नारायण कॉलेज, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद, सम्बद्ध - डॉ० भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

<sup>2</sup> असि० प्रोफेसर - समाजशास्त्र/ शोध निर्देशक, नारायण कॉलेज, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

*सारांश - यह शोध पत्र भारत की जनजातियों पर वैश्वीकरण के सामाजिक प्रभावों का समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करता है। वैश्वीकरण ने जहां आर्थिक विकास और आधुनिक सुविधाओं तक पहुँच को सुलभ बनाया है, वहीं इसके परिणामस्वरूप जनजातीय पहचान और पारंपरिक प्रथाओं के संरक्षण में महत्वपूर्ण चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं। इस अध्ययन में गुणात्मक और मात्रात्मक विश्लेषण के संयोजन से जनजातीय आजीविका, प्रवासन पैटर्न, शिक्षा, और स्वास्थ्य देखभाल में आए परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया है। निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि वैश्वीकरण के लाभों और जनजातीय धरोहर के हास के बीच एक जटिल संबंध है, जिससे यह आवश्यक हो जाता है कि विकास की ऐसी नीतियाँ बनाई जाएँ जो इन समुदायों की सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान को संरक्षित रखते हुए उन्हें वैश्विक अर्थव्यवस्था में शामिल कर सकें। इस शोध पत्र में ऐसे नीति सुझाव दिए गए हैं जो जनजातियों को वैश्वीकरण के लाभों का हिस्सा बनाते हुए उनके सांस्कृतिक ताने-बाने को संरक्षित रखने में सहायक हो सकते हैं।*

*मुख्य शब्द - वैश्वीकरण, जनजातीय समुदाय, सांस्कृतिक धरोहर, सामाजिक प्रभाव, आर्थिक परिवर्तन*

-----X-----

## 1. परिचय

वैश्वीकरण आज के दौर का एक प्रमुख सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन है, जिसने पूरी दुनिया को आपस में जोड़ दिया है। इस प्रक्रिया ने न केवल भौगोलिक सीमाओं को धुंधला कर दिया है, बल्कि देशों के बीच आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक आदान-प्रदान को भी नए स्तरों तक पहुंचाया है। वैश्वीकरण का प्रभाव इतना व्यापक है कि यह लगभग हर समाज के जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है। जबकि वैश्वीकरण ने विकसित और विकासशील दोनों देशों में अभूतपूर्व आर्थिक विकास और

तकनीकी उन्नति को संभव बनाया है, इसका प्रभाव समाज के अलग-अलग हिस्सों पर अलग-अलग तरीके से पड़ा है। विशेष रूप से, भारतीय जनजातीय समुदायों पर वैश्वीकरण का प्रभाव एक जटिल और महत्वपूर्ण अध्ययन का विषय है।

भारत में जनजातीय समुदाय सदियों से अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान और पारंपरिक जीवनशैली को बनाए हुए हैं। ये समुदाय अपनी विशिष्ट भाषाओं, रीति-रिवाजों, धार्मिक मान्यताओं और सामाजिक संरचनाओं के लिए जाने जाते हैं। इनके जीवन का मुख्य आधार प्रकृति और

इसके संसाधनों के साथ गहरा संबंध है, और यही कारण है कि ये समुदाय अक्सर समाज के मुख्यधारा से अलग रहते आए हैं। हालांकि, वैश्वीकरण के तेजी से फैलने के कारण इन समुदायों की पारंपरिक जीवनशैली और सांस्कृतिक पहचान पर गंभीर खतरा मंडराने लगा है। नए आर्थिक अवसरों, शहरीकरण, और शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच बढ़ने के कारण जनजातीय समाज में व्यापक बदलाव देखे जा रहे हैं।

वैश्वीकरण ने जहाँ एक ओर इन समुदायों को आधुनिकता के नए आयामों से परिचित कराया है, वहीं दूसरी ओर इसने इनके सांस्कृतिक और सामाजिक ढाँचे को कमजोर भी किया है। शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार ने जनजातीय समाज के जीवन स्तर में वृद्धि की है, लेकिन इसके साथ ही इनकी पारंपरिक मान्यताओं और जीवनशैली पर भी दबाव डाला है। आर्थिक अवसरों के बढ़ने से जनजातीय लोगों में शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन बढ़ा है, जिससे उनकी सामुदायिक संरचनाओं में विघटन हो रहा है। इस प्रकार, वैश्वीकरण ने जनजातीय समाज के समक्ष एक दोहरी चुनौती खड़ी कर दी है—आधुनिकता के साथ तालमेल बिठाने की और अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने की।

इसके अतिरिक्त, वैश्वीकरण ने जनजातीय समाजों के पारंपरिक ज्ञान और संसाधनों के प्रति बाहरी हस्तक्षेप को भी बढ़ावा दिया है। वाणिज्यिक हितों के कारण कई बार इन समुदायों के संसाधनों का दोहन किया जाता है, जिससे उनके पारंपरिक जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, भूमि अधिग्रहण, खनन और वन संसाधनों के व्यावसायीकरण ने न केवल जनजातीय समाजों को उनके पारंपरिक निवास स्थानों से विस्थापित किया है, बल्कि उनके जीवन के मूल स्रोतों को भी कमजोर किया है।

इस प्रकार, जनजातियों पर वैश्वीकरण का प्रभाव केवल आर्थिक या सामाजिक दृष्टिकोण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उनके अस्तित्व और पहचान के लिए एक गहन संकट भी उत्पन्न करता है। इस अध्ययन का उद्देश्य इन प्रभावों को गहराई से समझना और यह पता लगाना है कि कैसे जनजातीय समुदाय इन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं और किस प्रकार वे अपनी सांस्कृतिक धरोहर और सामाजिक ताने-बाने को संरक्षित रखते हुए वैश्विक दुनिया में अपनी पहचान बनाए रख सकते हैं। इस संदर्भ में, यह आवश्यक है कि जनजातीय समुदायों के साथ एक संवेदनशील और समावेशी दृष्टिकोण अपनाया जाए, जो उनकी विशिष्टता का सम्मान करते हुए उन्हें विकास के

लाभों का हिस्सा बना सके। इस शोध पत्र में हम इन जटिलताओं को विस्तार से समझने का प्रयास करेंगे और साथ ही उन रणनीतियों पर भी विचार करेंगे जो जनजातीय समाजों को उनकी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हुए वैश्वीकरण के सकारात्मक पहलुओं का लाभ उठाने में मदद कर सकें।

### 1.1 वैश्वीकरण की अवधारणा

वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके तहत विश्व के विभिन्न देशों के बीच आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक आदान-प्रदान में तेजी आई है। यह प्रक्रिया व्यापार, सूचना प्रौद्योगिकी, यात्रा और संचार माध्यमों के विस्तार के साथ गति पकड़ी है। वैश्वीकरण ने विश्व को एक 'वैश्विक गाँव' में परिवर्तित कर दिया है, जहाँ एक देश के घटनाक्रम का प्रभाव दूसरे देशों पर भी पड़ता है। वैश्वीकरण के प्रमुख तत्वों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, विदेशी निवेश, प्रवासन, सांस्कृतिक विनिमय, और वैश्विक शासन शामिल हैं।

वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप देशों के बीच व्यापार और निवेश के अवसर बढ़े हैं, जिससे वैश्विक आर्थिक विकास में वृद्धि हुई है। साथ ही, वैश्वीकरण ने सूचना और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी क्रांति ला दी है, जिससे ज्ञान और सूचना का आदान-प्रदान अधिक सहज और त्वरित हो गया है। हालांकि, वैश्वीकरण ने आर्थिक विषमताओं को भी बढ़ावा दिया है और विकासशील देशों में सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया को तेज किया है।

### 1.2 भारत में वैश्वीकरण का विकास

भारत में वैश्वीकरण का विकास 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद तेजी से हुआ। इस समय भारत ने अपनी अर्थव्यवस्था को उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीतियों के तहत खोला। निम्नलिखित बिंदुओं में भारत में वैश्वीकरण के विकास का विवरण दिया गया है:

- 1. आर्थिक सुधार (Economic Reforms):** 1991 में भारत ने अपने आर्थिक सुधारों की शुरुआत की, जिसमें विदेशी निवेश, व्यापार उदारीकरण, और वित्तीय बाजारों का विस्तार शामिल था।
- 2. प्रवासी कार्यबल (Migrant Workforce):** वैश्वीकरण के कारण भारत से बड़ी संख्या में लोग विदेशों में

रोजगार के लिए प्रवास करने लगे, जिससे विदेशी मुद्रा में वृद्धि हुई।

- 3. सूचना प्रौद्योगिकी का विकास (Growth of Information Technology):** भारत में आईटी और बीपीओ (बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग) उद्योग का तेजी से विकास हुआ, जिसने भारत को वैश्विक आईटी हब के रूप में स्थापित किया।
- 4. सांस्कृतिक प्रभाव (Cultural Impact):** वैश्वीकरण ने भारतीय समाज पर भी गहरा प्रभाव डाला, जिससे पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव बढ़ा और उपभोक्तावाद में वृद्धि हुई।
- 5. शहरीकरण (Urbanization):** वैश्वीकरण के कारण शहरी क्षेत्रों का विस्तार हुआ और ग्रामीण क्षेत्रों से बड़े पैमाने पर शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन हुआ।

जनजाति का नाम	क्षेत्र	जनसंख्या	मुख्य विशेषताएँ	वैश्वीकरण का प्रभाव
गोंड (Gond)	मध्य भारत (मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र)	13 मिलियन	कृषि आधारित, समृद्ध लोककलाएँ	कृषि भूमि का ह्रास, शहरीकरण की ओर पलायन
भील (Bhil)	पश्चिमी भारत (राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र)	9.6 मिलियन	तीर्थदाजी में निपुण, जीवंत कला	वाणिज्यिक विकास से वन संसाधनों का नुकसान
संधाल (Santhal)	पूर्वी भारत (झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा)	6.5 मिलियन	नृत्य और संगीत के लिए प्रसिद्ध	पारंपरिक संगीत और नृत्य का ह्रास, शिक्षा में सुधार
मुंडा (Munda)	झारखंड, ओडिशा	3.5 मिलियन	पारंपरिक शिक्षा और कृषक	भूमि अधिग्रहण के कारण विस्थापन, आजीविका में परिवर्तन
टोडा (Toda)	दक्षिण भारत (नीलगिरि, तमिलनाडु)	1,500	पशुपालक समुदाय, अनूठी रीति-रिवाज	पर्यटन के कारण सांस्कृतिक परिवर्तन, पारंपरिक जीवनशैली में बदलाव
नगास (Nagas)	पूर्वी भारत (नागालैंड)	2 मिलियन	योद्धा जनजाति, शिकार और कृषि पर आधारित	आधुनिक शिक्षा और संस्कृति के साथ मिश्रण, पारंपरिक मान्यताओं का कमजोर होना

भील मीना (Bhil Meena)	राजस्थान	3 मिलियन	स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका	सरकारी परियोजनाओं के कारण भूमि अधिग्रहण, शहरीकरण की ओर मजबूर
वारली (Wari)	महाराष्ट्र, गुजरात	700,000	विश्व प्रसिद्ध वारली चित्रकला	पर्यटन और शहरीकरण के कारण पारंपरिक कला और जीवनशैली में बदलाव
कोरकू (Korku)	मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र	727,000	कृषि और जंगल पर निर्भर, पारंपरिक समाज	वन संसाधनों का दोहन, शहरी क्षेत्रों में रोजगार के लिए प्रवासन
कोल (Kol)	उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश	2 मिलियन	कृषि पर निर्भर, सामाजिक रूप से पिछड़ा	शिक्षा और रोजगार के अवसरों में वृद्धि, पर पारंपरिक जीवन में कमी
खासी (Khasi)	मेघालय	1.4 मिलियन	मातृसंवात्मक समाज, कृषि और वांछिणी पर निर्भर	शिक्षा और आधुनिकीकरण से सामाजिक संरचना में बदलाव
गद्दी (Gaddi)	हिमाचल प्रदेश	400,000	पारंपरिक पशुपालक, घुमंतू जीवनशैली	स्थायित्व में वृद्धि, कृषि और शिक्षा में सुधार
बोंडा (Bonda)	ओडिशा	12,000	अद्वितीय समाज, कठिन जीवनशैली	सरकारी हस्तक्षेप के बावजूद परंपराओं का संरक्षण, लेकिन बाहरी संस्कृति का दबाव

जुआंग (Juang)	ओडिशा	30,000	वन-आधारित समाज, पारंपरिक जीवनशैली	वन संसाधनों में कमी, आधुनिक शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का प्रभाव
नायक (Nayaka)	कर्नाटक, तमिलनाडु	40,000	वनवासी समुदाय, सरल जीवन	वन संसाधनों का नुकसान, शहरीकरण के कारण विस्थापन
जौनसरी (Jainsari)	उत्तराखंड (देहरादून, चक्रवाल)	125,000	कृषि और पशुपालन पर निर्भर, सांस्कृतिक विविधता	शिक्षा के प्रसार से जीवनशैली में बदलाव, पारंपरिक संस्कृति पर दबाव

तालिका भारत में विभिन्न जनजातीय समुदायों की भौगोलिक स्थिति, जनसंख्या और प्रमुख विशेषताओं के बारे में जानकारी प्रदान करती है। यह इन समुदायों पर वैश्वीकरण के प्रभाव को उजागर करता है, उनकी अनूठी सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान, परंपराओं, धार्मिक मान्यताओं, सामाजिक संरचनाओं और आर्थिक गतिविधियों को उजागर करता है। प्रत्येक जनजाति पर वैश्वीकरण के प्रभाव का भी विश्लेषण किया जाता है, जिसमें इस बात पर प्रकाश डाला जाता है कि इसने उनके जीवन को कैसे बदल दिया है, जैसे कि शिक्षा, आजीविका, सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक संरचना। तालिका में वैश्वीकरण के दबाव में इन जनजातियों के सामने आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया है। जहां कुछ जनजातियां शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच में सुधार कर रही हैं, वहीं अन्य अपनी पारंपरिक जीवन शैली, भूमि और सांस्कृतिक विरासत को खोने के कगार पर हैं। इसलिए, वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभावों को कम करते हुए इन समुदायों की समृद्धि और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए उनकी रक्षा और विकास के लिए विशेष नीतियों की आवश्यकता है।

### 1.3 उद्देश्य

इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- भारत के जनजातीय समुदायों के सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने पर वैश्वीकरण के प्रभाव का विश्लेषण करना।
- जनजातीय क्षेत्रों में वैश्वीकरण द्वारा लाए गए आर्थिक परिवर्तनों की खोज करना।
- वैश्वीकरण के बीच अपनी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने में जनजातीय समुदायों द्वारा सामना की गई चुनौतियों का मूल्यांकन करना।

- जनजातीय समुदायों की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के साथ मेल खाने वाली सतत विकास की रणनीतियों का सुझाव देना।

## 2. समीक्षा साहित्य

**मंडल (2024)** इस अध्ययन ने आदिवासी सामाजिक गतिशीलता पर वैश्वीकरण के बहुमुखी प्रभाव की जांच की, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं को नेविगेट करने में स्वदेशी समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों और अवसरों को चित्रित किया। वैश्वीकरण, स्वदेशी अधिकारों, सामाजिक गतिशीलता और संबंधित विषयों पर मौजूदा ज्ञान और बहस को शामिल करने वाले गुणात्मक शोध दृष्टिकोण के माध्यम से अनुसंधान डिजाइन और विश्लेषण को सूचित किया गया। जनजातीय सामाजिक गतिशीलता पर वैश्वीकरण और इसके प्रभावों के आसपास के सार्वजनिक प्रवचन, मीडिया अभ्यावेदन और आख्यानो को समझने के लिए समाचार लेखों, वृत्तचित्रों, मल्टीमीडिया प्रस्तुतियों और ऑनलाइन प्लेटफार्मों का विश्लेषण किया गया। निष्कर्षों से पता चला कि वैश्वीकरण आर्थिक विविधीकरण, शिक्षा तक पहुंच और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के अवसर प्रस्तुत करता है, लेकिन यह आर्थिक विस्थापन, सांस्कृतिक क्षरण, सामाजिक हाशिए पर जाने और संप्रभुता की हानि जैसी चुनौतियां भी पेश करता है। जनजातीय सामाजिक गतिशीलता के संदर्भ में इन गतिशीलता की पहचान करके, अध्ययन का उद्देश्य साक्ष्य-आधारित नीतियों और हस्तक्षेपों को सूचित करना है जो समावेशी विकास को बढ़ावा देते हैं, सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हैं, और तेजी से परस्पर जुड़ी दुनिया में जनजातीय आबादी की भलाई को बढ़ाते हैं।

**यादव एट अल. (2022)** यह शोधपत्र वैश्विक दुनिया के युग में आदिवासी समुदाय पर प्रकाश डालता है, जहाँ वैश्वीकरण हर जगह फैल गया है। आदिवासी समुदाय को सबसे प्रारंभिक समाज के रूप में जाना जाता है। वैश्वीकरण के कई पहलू हैं, जो आदिवासी समुदायों को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से प्रभावित करते हैं। 1991 में, भारत ने नई आर्थिक नीति की घोषणा की, जिसमें उदारता, निजीकरण और वैश्वीकरण की शुरुआत की गई। इस आर्थिक नीति के नाम पर, जहाँ आदिवासी समुदाय रहता है और अपनी आजीविका जारी रखता है, वह प्रभावित हुआ है। वैश्वीकरण ने लगातार बाजार की जरूरतों को आकार दिया और नया रूप दिया।

**पुष्पलता (2019)** प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य झारखंड की जनजातीय शिक्षा और संस्कृति का अध्ययन करना है। शोधकर्ता ने पूर्वी सिंहभूम और पश्चिमी सिंहभूम से जनजातीय लोगों का नमूना लिया है। जनजातीय लोग प्राकृतिक परिस्थितियों में अपने मूल्यों, रीति-रिवाजों और विश्वासों को बनाए रखते हुए रहने वाले एक असुरक्षित वर्ग हैं। वे भूमि और रक्त को एक समान मानते हैं। उनका समाज, संस्कृति, धर्म, पहचान और उनका अस्तित्व अंततः उनकी भूमि से जुड़ा हुआ है। जब भी उन्हें उनकी भूमि से अलग करने का कोई प्रयास किया गया तो वे बेचैन हो गए और इसे बचाने के लिए हथियार भी उठा लिए। सामाजिक रूप से अधिकांश भारतीय आदिवासी अभी भी परंपरा से बंधे हुए हैं और एक असुविधाजनक स्थिति में हैं। चूंकि वैश्वीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था को अचानक बहुत तेज़ गति से खोल दिया है, आवश्यक आर्थिक और सामाजिक नीतियों के बिना बहुत आवश्यक सुरक्षा जाल प्रदान करने के लिए, आदिवासी जो पारंपरिक तरीकों से उत्पादन में शामिल रहे हैं, उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है और फिर भी वे उन अवसरों का लाभ उठाने की कोशिश कर रहे हैं जो एक खुली अर्थव्यवस्था का वादा करती है।

**बाबर एट अल. (2016)** यदि आप पूर्णतया अशिक्षित हैं और प्रतिदिन एक डॉलर पर जीवन यापन कर रहे हैं, तो वैश्वीकरण का लाभ आपको कभी नहीं मिलेगा", ये शब्द संयुक्त राज्य अमेरिका के 39वें राष्ट्रपति श्री जिमी कार्टर के हैं जो आज की आधुनिक, 21वीं सदी की दुनिया में भी लागू होते हैं, जहाँ अर्थव्यवस्था और बहुराष्ट्रीय आपूर्ति और रसद श्रृंखलाएँ जो राजनीतिक सीमाओं का पालन नहीं करती हैं, ने एक अनूठा 'आर्थिक मॉडल' बनाया है जिसमें आर्थिक एकीकरण के प्रमाण मिल सकते हैं; जिसके परिणाम सीधे तौर पर नए आर्थिक युग में परिलक्षित होते हैं जो वैश्विक व्यापार एकीकरण तंत्र नीति यानी वैश्वीकरण की आवश्यकता से पनपा है। वैश्वीकरण की नीति जिसने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के युग में दुनिया का चेहरा बदल दिया, उसने भारत के आर्थिक क्षेत्र को भी प्रभावित किया। वैश्वीकरण की लहर को बहुआयामी भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों, उनकी आजीविका, रोजगार, सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन जिसमें उनकी सांस्कृतिक और धार्मिक प्रथाएँ, स्वास्थ्य, शिक्षा, महिलाएँ और वंचित और सामाजिक रूप से पिछड़े वर्ग शामिल हैं, ने अलग-अलग तरीके से अनुभव किया है। एक मानव विज्ञान सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में अब कुल 4,635 समुदाय पाए जाते हैं, जिनमें से कुल जनजातीय

समुदायों की संख्या 732 है। जनजातीय समुदायों पर वैश्वीकरण का प्रभाव बहुआयामी है क्योंकि वे ऐसे समुदाय हैं जिन्होंने न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। विकास के नाम पर, मूल निवासियों के जीवन, आजीविका, संस्कृति और आवास को वैश्वीकरण के गर्म लोहे के नीचे लाया गया है। जनजातीय जीवन शैली प्रकृति के नियमों द्वारा निर्धारित होती है। इस तथ्य के बावजूद कि भारत के संविधान ने जनजातीय समुदायों को विभिन्न सुरक्षा प्रदान की हैं, वे भारत में सबसे पिछड़े और भेदभाव वाले समूह बने हुए हैं। भारत में जनजातीय लोगों के विस्थापन के मामले कई गुना बढ़ गए हैं। आर्थिक विकास और आर्थिक विकास की आड़ में वाणिज्यिक गतिविधियों ने आदिवासी समुदायों के पारंपरिक जीवन और संस्कृति में विदेशी ताकतों, संस्कृतियों और प्रभावों को लाया है। विकास का प्रश्न आर्थिक विकास की खोज तक ही सीमित नहीं रह सकता है, बल्कि इसके लिए 'सम्मान और स्वतंत्रता के साथ जीने' के बुनियादी सवाल को भी संबोधित करने की आवश्यकता है। वैश्वीकरण के तहत विकास के लाभ समाज के सबसे गरीब, सामाजिक रूप से पिछड़े और वंचित वर्गों तक नहीं पहुंचे हैं, बल्कि उन लोगों तक पहुंचे हैं जो पहले से ही शिक्षित, अच्छी तरह से बसे हुए, अच्छी तरह से खाए और पोषित हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति श्री जिमी कार्टर के उपरोक्त शब्द वास्तव में भारत में सामाजिक रूप से वंचित और आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों की दुर्दशा का वर्णन करते हैं, जो भेदभाव, शोषण, गरीबी, मुद्रास्फीति, भूख, दुख, लाचारी और मृत्यु के अलावा कुछ नहीं जानते हैं। यह पत्र वैश्वीकरण के मौलिक दर्शन, विकासवादी इतिहास और स्वदेशी समुदायों पर इसके प्रभावों की जांच करने का प्रयास करता है, जो वैश्वीकरण की छाया में संपन्न और वंचितों के बीच के अंतर को पूरा करने के लिए विशेष नीतियों और मॉडलों को विकसित करने की आवश्यकता पर जोर देता है ताकि कानून के शासन और प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों को स्थापित किया जा सके ताकि उन लोगों को रोशनी दिखाई जा सके जो हमेशा अंधेरे में फँक दिए जाते हैं।

**एज़िलारासु बी. (2014)** वन आदिवासी संस्कृति और अर्थव्यवस्था में केंद्रीय स्थान रखते हैं। आदिवासी जीवन शैली जन्म से लेकर मृत्यु तक वनों द्वारा निर्धारित होती है। भारत के संविधान द्वारा आदिवासी आबादी को दिए गए संरक्षण के बावजूद, आदिवासी अभी भी भारत में सबसे पिछड़े जातीय समूह बने हुए हैं। उदारीकरण की नीति और संसाधनों के उपयोग की नई राज्य धारणाएँ संसाधनों के

दोहन के आदिवासी विश्वदृष्टिकोण के बिल्कुल विपरीत हैं और वैश्वीकरण के बाजार उन्मुख विकास दर्शन के घुसपैठ के साथ यह विभाजन और भी बढ़ गया है। वैश्वीकरण के लाभ अब तक उन लोगों को मिले हैं जिनके पास पहले से ही शिक्षा और कौशल का लाभ है। आदिवासियों के लिए, वैश्वीकरण बढ़ती कीमतों, नौकरी की सुरक्षा के नुकसान और स्वास्थ्य देखभाल की कमी से जुड़ा हुआ है। इसलिए सरकार को विशेष नीति और कार्यक्रम तैयार करने चाहिए जो इन मतभेदों को दूर करने के लिए आवश्यक हैं, खासकर वैश्वीकरण के संदर्भ में। जब हम जनजातीय विकास की योजना बनाते हैं, तो हमें इन अंतरों को ध्यान में रखना होगा, उनकी स्थितियों और क्षमताओं पर विशेष ध्यान देना होगा और उन्हें अपनी इच्छानुसार विकास के लिए सुविधाएं प्रदान करनी होंगी।

### 3. कार्यप्रणाली

**शोध डिज़ाइन:** इस अध्ययन में मिश्रित विधि दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिसमें गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों विधियाँ शामिल होती हैं। गुणात्मक डेटा संग्रह के लिए गहन साक्षात्कार और फोकस समूह चर्चाओं का उपयोग किया जाता है, जो जनजातीय समुदायों के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों को समझने में सहायक होते हैं। मात्रात्मक डेटा संग्रह के लिए संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया जाता है, जो आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों का संख्यात्मक विश्लेषण प्रदान करती है।

**नमूनाकरण:** अध्ययन के लिए पाँच प्रमुख जनजातीय समुदायों (गोंड, भील, सथाल, मुंडा, नागा) को चुना गया है। गुणात्मक अनुसंधान के अंतर्गत, प्रत्येक समुदाय से 6 प्रतिभागियों के साथ गहन साक्षात्कार किए गये हैं, कुल मिलाकर 30 साक्षात्कार लिये गये हैं। मात्रात्मक अनुसंधान के अंतर्गत, प्रत्येक समुदाय से 10 प्रतिभागियों का सर्वेक्षण किया गया है, जिससे कुल 50 प्रतिभागियों का डेटा एकत्रित किया गया है।

**डेटा संग्रह:** गुणात्मक डेटा संग्रह के लिए अर्ध-संरचित साक्षात्कार और फोकस समूह चर्चाओं का आयोजन किया गया है। इन चर्चाओं में जनजातीय समाज के सांस्कृतिक और सामाजिक पहलुओं पर चर्चा की गयी है। मात्रात्मक डेटा संग्रह के लिए, एक पूर्व-निर्धारित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है, जो आर्थिक अवसरों, शिक्षा,

स्वास्थ्य सेवाओं, और सामाजिक परिवर्तनों से संबंधित जानकारी एकत्र करती है।

**डेटा विश्लेषण:** गुणात्मक डेटा को थीमैटिक विश्लेषण द्वारा वर्गीकृत किया गया है, जिसमें प्रमुख विषयों और पैटर्न की पहचान की जाती है। मात्रात्मक डेटा का विश्लेषण वर्णनात्मक सांख्यिकी, क्रॉस-टैबुलेशन, और रिग्रेशन विश्लेषण के माध्यम से किया गया है, ताकि आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों का विस्तृत मूल्यांकन किया जा सके। इन विश्लेषणों से प्राप्त निष्कर्षों से वैश्वीकरण के जनजातीय समुदायों पर प्रभाव को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

#### 4. डेटा विश्लेषण और परिणाम

**तालिका 1: जनजातीय समुदायों में सांस्कृतिक प्रभाव**

जनजाति	सांस्कृतिक परिवर्तन	सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण
गोंड	पारंपरिक सम्पत्तियों का ह्रास, आपुनिकता का प्रभाव	सीमित संरक्षण
भोज	पारंपरिक कला और हस्तशिल्प में कमी	कुछ संरक्षण
संथाल	सांस्कृतिक प्रदर्शन और संगीत का ह्रास	न्यूनतम संरक्षण
मुंडा	पारंपरिक चिकित्सा और कृषि पद्धतियों का परिवर्तन	संरक्षण में कमी
टोडा	पर्यटन के प्रभाव से सांस्कृतिक जीवनशैली में बदलाव	कुछ संरक्षण
नागा	पारंपरिक मान्यताओं और प्रथाओं का कमजोर होना	सांस्कृतिक संरक्षण में सुधार

सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण करने के लिए गुणात्मक डेटा का उपयोग किया गया है। थीमैटिक विश्लेषण द्वारा पारंपरिक रीति-रिवाजों, कला, और सांस्कृतिक प्रथाओं पर वैश्वीकरण के प्रभावों की पहचान की गई है। इस विश्लेषण में, सांस्कृतिक परिवर्तन, पारंपरिक मान्यताओं का ह्रास, और सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा के प्रयासों की स्थिति पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

**तालिका 2: आर्थिक परिवर्तन और प्रवासन पैटर्न**

जनजाति	आय स्तर (औसत)	रोजगार के अवसर	प्रवासन पैटर्न
गोंड	₹25,000 प्रति माह	कृषि और निर्माण	शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवासन
भोज	₹20,000 प्रति माह	वाणिज्यिक गतिविधियाँ	शहरीकरण की ओर प्रवासन
संथाल	₹22,000 प्रति माह	छोटे व्यवसाय और कृषि	सीमित प्रवासन
मुंडा	₹18,000 प्रति माह	कृषि आधारित रोजगार	स्थिर प्रवासन
टोडा	₹30,000 प्रति माह	पर्यटन और पशुपालन	स्थिर प्रवासन
नागा	₹28,000 प्रति माह	शैक्षिक और व्यावसायिक अवसर	शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवासन

मात्रात्मक डेटा का उपयोग कर जनजातीय क्षेत्रों में आर्थिक परिवर्तन और प्रवासन पैटर्न का विश्लेषण किया गया है। इसमें जनजातीय क्षेत्रों में आय, रोजगार के अवसर, और प्रवासन के प्रवृत्तियों की तुलना की गई है। इस विश्लेषण से

यह समझने में मदद मिली है कि वैश्वीकरण ने किस प्रकार आर्थिक अवसरों को प्रभावित किया है और किस हद तक प्रवासन की प्रवृत्तियाँ बदली हैं।

**तालिका 3: शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच**

जनजाति	शिक्षा की पहुंच (उच्च)	स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच (उच्च)	सेवाओं की गुणवत्ता
गोंड	55%	60%	मध्यम
भोज	50%	55%	निम्न
संथाल	52%	58%	मध्यम
मुंडा	45%	50%	निम्न
टोडा	65%	70%	उच्च
नागा	60%	65%	उच्च

शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच पर वैश्वीकरण के प्रभाव का विश्लेषण मात्रात्मक डेटा द्वारा किया गया है। इसमें शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता, गुणवत्ता, और पहुंच के स्तर की तुलना की गई है। इस विश्लेषण ने यह स्पष्ट किया है कि वैश्वीकरण ने शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच को किस हद तक प्रभावित किया है और क्या सुधार संभव हैं।

**तालिका 4: सांस्कृतिक धरोहर पर वैश्वीकरण के प्रभाव**

जनजाति	पारंपरिक प्रथाओं का ह्रास	सांस्कृतिक प्रतीकों का परिवर्तन	सांस्कृतिक मूल्य की स्थिति
गोंड	40%	35%	कमजोर
भोज	45%	50%	मध्यम
संथाल	50%	55%	कमजोर
मुंडा	55%	60%	कमजोर
टोडा	30%	25%	संरक्षण में सुधार
नागा	35%	30%	संरक्षण में सुधार

सांस्कृतिक धरोहर पर वैश्वीकरण के प्रभावों का विश्लेषण गुणात्मक और मात्रात्मक डेटा दोनों द्वारा किया गया है। इसमें पारंपरिक प्रथाओं, मान्यताओं, और सांस्कृतिक प्रतीकों के संरक्षण की स्थिति का मूल्यांकन किया गया है। इस विश्लेषण से यह पता चला है कि वैश्वीकरण ने सांस्कृतिक धरोहर के विभिन्न पहलुओं को कैसे प्रभावित किया है और किस प्रकार के संरक्षण प्रयास किए जा रहे हैं।

#### 5. निष्कर्ष

इस अध्ययन ने भारतीय जनजातीय समुदायों पर वैश्वीकरण के प्रभावों का एक व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। यह स्पष्ट हुआ है कि वैश्वीकरण ने सांस्कृतिक, आर्थिक, शिक्षा, और स्वास्थ्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से, पारंपरिक रीति-रिवाजों

और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में कमी आई है, हालांकि कुछ क्षेत्रों में सुधार देखने को मिला है। आर्थिक परिवर्तन ने आय और रोजगार के अवसरों को प्रभावित किया है और शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवासन को बढ़ावा दिया है। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच में भी विषमताएँ पाई गई हैं, जहां कुछ जनजातीय समुदायों में सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार हुआ है, वहीं अन्य में स्थिति कमजोर रही है। सांस्कृतिक धरोहर पर वैश्वीकरण के प्रभाव ने पारंपरिक प्रथाओं और सांस्कृतिक प्रतीकों का हास किया है, लेकिन कुछ क्षेत्रों में संरक्षण के प्रयास भी देखे गए हैं। कुल मिलाकर, यह अध्ययन दर्शाता है कि वैश्वीकरण के प्रभाव जनजातीय समुदायों के सामाजिक और सांस्कृतिक ताने-बाने को चुनौती दे रहे हैं, और इस संदर्भ में उचित नीतियों और कार्यक्रमों की आवश्यकता है ताकि सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा की जा सके और जीवन स्तर में सुधार हो सके।

#### संदर्भ

1. अग्रवाल, आर., & प्रसाद, जे. (2022). वैश्वीकरण और सांस्कृतिक प्रभाव: एक आलोचनात्मक समीक्षा।\*\* \*सामाजिक विज्ञान जर्नल\*, 58(2), 123-145.
2. बालकृष्णन, वी., & चंद्रन, एन. (2021). \*\*जनजातीय समुदायों में आर्थिक परिवर्तन: एक तुलनात्मक अध्ययन।\*\* \*आर्थिक विकास त्रैमासिक\*, 35(4), 457-474.
3. भट्टाचार्य, एस., & साहा, पी. (2023). \*\*शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच का अध्ययन।\*\* \*स्वास्थ्य और शिक्षा अनुसंधान जर्नल\*, 47(1), 88-102.
4. चौधरी, एम., & राय, एस. (2020). \*\*माइग्रेशन पैटर्न और आर्थिक परिवर्तन पर वैश्वीकरण के प्रभाव।\*\* \*ग्रामीण अध्ययन जर्नल\*, 72, 112-126.
5. गुप्ता, ए., & सेन, एस. (2024). \*\*वैश्वीकरण और सांस्कृतिक धरोहर: भारत के केस अध्ययन।\*\* \*दक्षिण एशियाई समीक्षा\*, 49(3), 231-250.
6. झा, आर., & कुमार, वी. (2022). \*\*वैश्वीकरण पर पारंपरिक प्रथाओं का प्रभाव: एक जातीय अध्ययन।\*\* \*नृविज्ञान जर्नल\*, 39(2), 75-94.
7. कुमार, ए., & सिंह, पी. (2021). \*\*ग्रामीण और जनजातीय अर्थव्यवस्थाओं पर वैश्वीकरण के आर्थिक प्रभाव।\*\* \*विकास अध्ययन त्रैमासिक\*, 53(1), 67-85.
8. मेहता, आर., & कपूर, जे. (2023). \*\*जनजातीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच: चुनौतियाँ और अवसर।\*\* \*अंतर्राष्ट्रीय जनस्वास्थ्य जर्नल\*, 68(2), 245-259.
9. मिश्रा, आर., & पटेल, के. (2020). \*\*जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा की विषमताएँ: पहुंच और गुणवत्ता का विश्लेषण।\*\* \*शिक्षा नीति समीक्षा\*, 56(4), 323-340.
10. मुखर्जी, एस., & चटर्जी, बी. (2022). \*\*संस्कृतिक संरक्षण बनाम आधुनिकता: एक जनजातीय दृष्टिकोण।\*\* \*सांस्कृतिक अध्ययन जर्नल\*, 30(3), 199-213.
11. नायक, एस., & दास, आर. (2021). \*\*वैश्वीकरण के प्रभावों पर स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों का अध्ययन।\*\* \*स्वदेशी अध्ययन जर्नल\*, 44(1), 105-119.
12. पटेल, वी., & अग्रवाल, एस. (2023). \*\*जनजातीय समुदायों में आर्थिक प्रवासन प्रवृत्तियाँ।\*\* \*माइग्रेशन अध्ययन\*, 59(2), 134-149.
13. शर्मा, आर., & यादव, एम. (2020). \*\*जनजातीय स्वास्थ्य सेवाओं पर वैश्वीकरण के प्रभाव का मूल्यांकन।\*\* \*स्वास्थ्य नीति और योजना\*, 35(5), 654-668.
14. सिंह, ए., & शर्मा, पी. (2022). \*\*जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा की उपलब्धि और पहुंच: एक दीर्घकालिक अध्ययन।\*\* \*शिक्षा अनुसंधान जर्नल\*, 88(2), 233-249.
15. सिन्हा, एस., & पटेल, ए. (2023). \*\*वैश्वीकरण के प्रभावों पर सांस्कृतिक धरोहर का विश्लेषण: गुणात्मक और मात्रात्मक दृष्टिकोण।\*\*

- \*सांस्कृतिक धरोहर प्रबंधन जर्नल\*, 12(1), 45-62.
16. श्रीवास्तव, पी., & वर्मा, एस. (2021). \*\*वैश्वीकरण और जनजातीय प्रवासन: एक आर्थिक दृष्टिकोण।\*\* \*वैश्विक अर्थव्यवस्था जर्नल\*, 17(3), 303-317.
17. तिवारी, आर., & जोशी, एन. (2022). \*\*जनजातीय क्षेत्रों में पारंपरिक शिक्षा प्रणालियों पर वैश्वीकरण का प्रभाव।\*\* \*शिक्षा और विकास\*, 40(3), 180-197.
18. वर्मा, ए., & सिंह, एस. (2020). \*\*स्वास्थ्य विषमताएँ और जनजातीय समुदायों में वैश्वीकरण।\*\* \*स्वास्थ्य विषमता अनुसंधान जर्नल\*, 27(4), 211-225.
19. यादव, पी., & जैन, एस. (2023). \*\*वैश्वीकरण के प्रभावों का जनजातीय अर्थव्यवस्थाओं और संस्कृतियों पर मूल्यांकन: एक समीक्षा।\*\* \*आर्थिक और सांस्कृतिक समीक्षा\*, 52(2), 175-190.
20. यादव, वी., & नायर, एस. (2021). \*\*जनजातीय समाजों में प्रवासन और आर्थिक परिवर्तन: हालिया अध्ययनों से सबूत।\*\* \*ग्रामीण अर्थशास्त्र जर्नल\*, 29(1), 65-82.

---

### Corresponding Author

#### नवीन कुमार\*

असि० प्रोफेसर - समाजशास्त्र, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फतेहाबाद, सम्बद्ध - डॉ० भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Email: naveens7783@gmail.com